प्राक्कथन

भारतीय परम्परा के अनुसार क्षितिज, जल, पावक, गगन एवं समीर जीवन के पाँच मूल तत्व हैं। जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि के कारण हमने इनका प्रबन्धन बुद्धिमत्ता एवं कौशल से नहीं किया है। जल स्रोतों का विकास एवं उनका उचित उपयोग केवल कृषि क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि विद्युत उत्पादन, बाढ़ एवं सूखे की समस्याओं से निपटने, पेयजल एवं अन्य कई समस्याओं के हल के लिए प्रथम आवश्यकता बन गया है। भारत एक विशाल देश है जिसमें विभिन्न जाति, भाषा, रहन-सहन व खान-पान के लोग मिल-जुल कर रहते हैं। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते आयामों का फायदा तभी है जब उनकी जानकारी आम जनता तक पहुँचे। आधुनिक युग में जलविज्ञान के क्षेत्र में जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की अनेक समुन्नत तकनीकों का विकास हो चुका है, परन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि जनसाधारण इन तकनीकों के महत्व को समझ कर अपना सके।

भाषा एक ऐसा माध्यम है जो विभिन्न भाषा-भाषियों को निकट लाने में एक सुगम सेतु का काम कर सकता है। देश की एकता और अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रदेशों की जनता को भावनात्मक दृष्टि से परस्पर निकट लाया जाए। इसके लिए भाषिक स्तर पर आदान प्रदान को तथा एक दूसरे की भाषा को सीखने समझने की प्रवृत्ति को बढावा दिया जाना चाहिए। इस प्रकाशन के दो उददेश्य हैं : १. जलविज्ञान में सामान्यतः उपयोग होने वाली शब्दावली के आठ क्षेत्रीय भाषाओं में रूपान्तरण को प्रस्तुत करना ताकि उन क्षेत्रों में जनसाधारण जलविज्ञान शब्दावली को समझ सकें तथा, २. विभिन्न प्रदेशों का जलविज्ञान के क्षेत्र में भाषिक स्तर पर आदान प्रदान। इस क्रम में 395 शब्दों की जलविज्ञानीय शब्दावली का प्रथम अंक अगस्त, 1992 में प्रकाशित किया गया था। इस कार्य को मिले प्रोत्साहन के बाद इसे आगे बढ़ाने का निश्चय किया गया। इस द्वितीय अंक में जलविज्ञानीय शब्दों के समावेश के लिए संबंधित राज्यों से राय ली गई तथा जलविज्ञान के 605 शब्दों का चयन किया गया। संबंधित राज्यों के जल संसाधन विभागों तथा भाषाविदों की सहायता से इन शब्दों के क्षेत्रीय भाषाओं में रूपान्तरण तैयार किये गये। इन रूपान्तरों को फिर भाषाविदों द्वारा रोमन एवं देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित किया गया।

इस अवसर पर मैं देश के उन प्रमुख वैज्ञानिकों और भषाविदों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने राष्ट्रीय महत्व के इस गरिमामय कार्य को पूर्ण करने के लिए पूर्ण उत्साह, हार्दिक सहयोग और अनन्य निष्ठा से कार्य किया। संस्थान श्री आर. एन. डे, तत्कालीन मुख्य अभियन्ता, डिजाइन एवं अनुसंधान, श्री एस. के. चटर्जी, तत्कालीन सचिव, पश्चिमबंग बंगला अकादमी एवं श्री अमिताभ मुखोपाध्याय, पूर्व सचिव, पश्चिमबंग बंगला अकादमी, कलकत्ता (बंगला भाषा के लिए); श्री के. आर. मेहता, तत्कालीन अधीक्षण अभियन्ता, नर्मदा एवं जल संसाधन विभाग, गांधीनगर, (गुजराती भाषा के लिए); श्री एस. सी. सक्सेना, तत्कालीन उप निदेशक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली (हिन्दी भाषा

जल संसाधन विकास संगठन, बैंगलोर (कन्नड़ भाषा के लिए); श्री सी. अनुरूधन, तत्कालीन अतिरिक्त सचिव एवं श्री एन. एम. ओमाना, तत्कालीन अवर सचिव, सिचाई विभाग, थिरूवनन्तपुरम (मलयालम भाषा के लिए); श्री वी. पी. शिम्पी, तत्कालीन सचिव, सिंचाई विभाग, मुम्बई एवं अधीक्षण अभियन्ता, सिंचाई परियोजना एवं ज़ल संसाधन अन्वेषण वृत्त, पुणे (मराठी भाषा के लिए); श्री पी. महालिन्गम, तत्कालीन संयुक्त सचिव, लोक निर्माण विभाग एवं श्री एस. स्वामीनाथन, तत्कालीन मुख्य अभियन्ता (भूजल), लोक निर्माण विभाग, चेन्नई (तमिल भाषा के लिए) तथा डा. पी. बाबू राव, तत्कालीन निदेशक, भूजल विभाग, हैदराबाद एवं मुख्य अभियन्ता (अन्वेषण) , आई. एवं सी. ए. डी. विभाग, हैदराबाद (तेलगु भाषा के लिए) का रूपान्तरण उपलब्ध कराने के लिए हार्दिक आभार प्रकट करता है ।

इस कार्य को सफल बनाने के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भी बहुत परिश्रम किया । श्री मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञानिक सी ने इस कार्य का समन्वयन किया तथा इस प्रकाशन को अन्तिम रूप दिया । श्री बृजेश कुमार, आशुलिपिक एवं श्री महेन्द्र सिंह, आशुलिपिक (हिन्दी) ने इस कार्य को टंकित करने में अपना योगदान दिया ।

सौभाग्य सेठ

(सौभाग्य मल सेठ)

निदेशक

रूड़की

मई २०, १९९९